प्रयाण गीत

ये वक्त न ठहरा है, ये वक्त न ठहरेगा,
यूँ ही गुजर जाएगा, घबराना कैसा
हिम्मत से काम लेंगे, घबराना कैसा
सागर के सीने से, पाए हैं मोती,
लहरें कभी बल खाएं, घबराना कैसा।।
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।
ये सुख-दुख जीवन में आते और जाते हैं,
है राह जरा मुश्किल घबराना कैसा।
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।।
जब कदम बढ़ाए हैं, मंजिल मिल जाएगी,
दुख पहले आ जाए घबराना कैसा।
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।।
यह महक गुलाबों की महकाती है गुलशन,
काँटा कभी चुभ जाए घबराना कैसा।।
हिम्मत से काम लेंगे घबराना कैसा।।